उत्तर प्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों की 29वीं वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला

(10–12 सितम्बर 2022)

दिनांक 10–09–2020 को भाकृअनुप–कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (अटारी), जोन–3, कानपुर के अन्तर्गत आने वाले उत्तर प्रदेश के 89 'कृषि विज्ञान केन्द्रों की 29वीं वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला' का उद्घाटन समारोह सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ में आयोजित किया गया। यह कार्यशाला भाकृअनुप–अटारी कानपुर एवं सरदार वल्लभभाई कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित की जा रही है। तीन दिवसीय कार्यशाला 10 से 12 सितम्बर 2022 तक चलेगी। इस कार्यशाला में उत्तर प्रदेश के समस्त 89 कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतवर्ष (2021–22) की प्रगति की समीक्षा व आगामी वर्ष (2023) की कार्ययोजना की समीक्षा की जाएगी।

कार्यशाला में मुख्य अतिथि श्री सूर्य प्रताप शाही जी, माननीय मंत्री कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशनों का विमोचन किया गया और अभिनव किसानों और अन्य वैज्ञानिकों तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा कि प्रत्येक केवीके को किसानों के लिए एक मॉडल अवश्य विकसित करना चाहिए। केवीके को मल्चिंग पर ध्यान देने के साथ संसाधन संरक्षण पर बल देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक होने के नाते हमें अपनी कार्य गति तेज करनी चाहिए। हमें हर किसान को वैज्ञानिक तकनीक मुहैया करानी चाहिए। स्प्रिंकलर तथा टपक, शुष्क सिंचाई प्रणाली आदि तकनीक पर और काम करने की जरूरत है। हमें कृषि क्षेत्र में व्यावहारिक रूप से काम करना है। हर जनपद में 1–1 हेक्टेयर की नर्सरी प्रदान की जाएगी ताकि किसानों के बीच 2 करोड़ पौधे/सब्जियों की पौध बांटी जाएं। कृषि क्षेत्र को और बढ़ावा देने की जरूरत है तथा कृषि बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों को जलवायु परिवर्तन पर आधारित नई तकनीक के साथ आगे आना चाहिए और आने वाली चुनौतियों का समाधान निकालना चाहिए। आने वाला वर्ष मिलेट (मोटे अनाज) वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. हिमांशु पाठक, सचिव डेयर और महानिदेशक भाकृअनुप, नई दिल्ली ने अपने संबोधन में कहा कि हमारे देश ने पिछले 75 वर्षों में कृषि में अभूतपूर्व प्रगति की है। अपनी जनसंख्या की अनाज की जरूरत पूर्ण करने के साथ ही अब हम कृषि उत्पादों को दूसरे देशों में भी निर्यात करने में सक्षम हैं। विज्ञान को समाज तक सही तरीके से पहुँचाया जाना चाहिए। कार्य में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक है। कृषि प्रसार व केवीके विज्ञान एवं किसान सेवा कार्य ठीक प्रकार से कर रहे हैं। आने वाले 25 वर्षों में हमें कृषि में उपज, लाभ और स्थिरता बढ़ाने की जरूरत है। प्रकृति के अनुकूल खेती और आधुनिक कृषि को मिलाकर कृषि मॉडल होना चाहिए जो उत्पादक, लाभदायक और पर्यावरण के अनुकूल हो। हमारे वैज्ञानिक नई वैरायटी लेकर आ रहे हैं और हमे इन तकनीकों को और बढ़ावा देना चाहिए। केवीके जिले में मॉडल के रूप में कार्य करें, आज ऐसी जरूरत है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. ए.के. सिंह, उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने अपने संबोधन में कहा कि प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना सरकार की प्राथमिकता है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में गेहूं की जल्दी बुवाई इस वर्ष खरीफ में कम वर्षा के कारण अत्यंत आवश्यक है। फसल का विविधीकरण महत्वपूर्ण है। भारत सरकार द्वारा 300 ड्रोन मुहैया कराए जाएंगे। ड्रोन खरीदने और ड्रोन प्रोजेक्ट में नियमों और विनियमों का ठीक से पालन करने की जरूरत है। फसल कैफेटेरिया केवीके का मुख्य अंग है और इसे प्रत्येक केवीके में अच्छी तरह से बनाए रखा जाना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि कैप्टन विकास गुप्ता, चेयरमैन, उपकार, लखनऊ और विशिष्ट अतिथि डॉ. संजय सिंह, महानिदेशक, उपकार, लखनऊ ने भी कार्यशाला को संबोधित किया।

डॉ. डी.आर. सिंह, कुलपति, सरदार वल्लभभाई कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ ने कहा कि प्राकृतिक खेती परियोजना के तहत केवीके प्रत्येक केवीके में 1 हेक्टेयर क्षेत्र में प्रदर्शनों को कवर करेंगे। प्रत्येक वैज्ञानिक के पास एक उत्पाद होना चाहिए। हम फूलों की खेती को बढ़ावा दे रहे हैं। पश्चिमी यूपी में हमें सब्जियों के उत्पादन को बढ़ावा देने की जरूरत है। चारे की समस्या पर काम करने की जरूरत है। हमें ग्रामीण महिलाओं के लिए महिला अध्ययन केंद्र खोलने और उन्हें प्रशिक्षण प्रदान किये जाने पर प्रयास करना है।

डॉ. यू.एस. गौतम, निदेशक, भाकृअनुप–अटारी, जोन तृतीय, कानपुर ने मुख्य अतिथि, सम्मानित अतिथियों और सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। हमारे वैज्ञानिकों ने किसानों की आय दोगुनी करने की सफलता की कहानियों को सफलतापूर्वक एकत्र और संकलित किया है, कुल 7500 किसानों की सफलता की कहानियां प्रकाशित की गई हैं। सरकार ने 32 केवीके में ड्रोन के लिए बजट दिया है, प्राकृतिक कृषि परियोजना के लिए 52 केवीके चुने गए हैं। बेहतर कार्य प्रदर्शन हेतु केवीके और आईसीएआर संस्थानों में रिक्त पदों को भरने की आवश्यकता है।

उद्घाटन कार्यक्रम के अंत में डॉ. पी.के. सिंह, निदेशक प्रसार, सरदार वल्लभभाई कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मेरठ ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया और उद्घाटन सत्र धन्यवाद के साथ समाप्त हुआ।

कार्यशाला में दूसरे दिन प्रदेश के कुल 89 कृषि विज्ञान केन्द्रों को तीन तकनीकी सत्र में विभाजित किया गया। उक्त तकनीकी सत्र में केन्द्र के प्रभारी अधिकारियों द्वारा प्रगति रिपोर्ट (2021–22) एवं कार्ययोजना (2023) का प्रस्तुतीकरण किया गया। प्रस्तुतीकरण के दौरान केन्द्रों की प्रगति रिपोर्ट एवं कार्ययोजना में आवश्यकतानुसार संशोधन हेतु सुझाव दिए गए। सभी केन्द्रों द्वारा प्रस्तुतीकरण के दौरान दिए गए सुझावों को संकलित कर कार्यशाला के तृतीय दिन समापन समारोह में प्रस्तुत किया जायेगा। तकनीकी सत्र में डा0 अनिल सिरोही, निदेशक शोध, डा0 मनोज कुमार संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान एवं डा0 आर0के0 नरेश अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर की अध्यक्षता में विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों के अधिकारियों द्वारा प्रगति रिपोर्ट एवं कार्ययोजना प्रस्तुत की गयी। उक्त के अतिरिक्त तकनीकी सत्र से पूर्व कृषि विज्ञान केन्द्रों की वेबसाईट के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी गयी।

कार्यशाला में तीसरे दिन समापन समारोह माननीय कुलपति जी, डा0 डी0आर0 सिंह की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में नवोन्मेषी कृषकों को भारत का भविष्य बताते हुए इनके कार्यों को अन्य कृषकों तक प्रसारित करने पर बल दिया तथा बीज एवं पौध सामग्री के वितरण के उपरान्त आच्छादित क्षेत्रफल पर सफलता की कहानी तैयार करने, विश्वविद्यालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र के कृषि तकनीकी सूचना केन्द्र में नवोन्मेषी कृषकों/महिलओं के उत्पादों को प्रदर्शित कर उनके विपणन पर बल दिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डा0 देवेश चतुर्वेदी, अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान ने अपने सम्बोधन में कृषकों की आय बढाने हेतु कृषि विविधीकरण में दलहनी, तिलहनी एवं मोटे अनाज के उत्पादन एवं उत्पादकता का बढाने पर जोर दिया जाये, उन्होंने उपभोक्ता केन्द्रित विभिन्न देशी प्रजातियों के संरक्षण एवं मूल्यवर्धन हेतु प्रेरित किया, उन्होने कृषक उत्पादक संगठनों को मजबूत बनाने पर जोर दिया, "परिणाम से प्रमाण" की अवधारणा पर प्राकृतिक खेती के मॉडल तथा नवोन्मेषी कृषकों के मॉडल को अधिक से अधिक किसानों में प्रसारित करने पर बल दिया। स्थानीय स्तर पर शुद्ध मसालों, गौ–आधारित हस्तशिल्प उत्पादों तथा अन्य महिला समूहों के उत्पादों की सशक्त विपणन पद्धति अपनाने पर जोर दिया, जिससे कि महिलाओं को स्वावलम्बी बनाया जा सकें, साथ ही इन्होने कृषि विज्ञान केन्द्रों (जोन–3) की 29वीं वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला के सफल आयोजन पर बधाई दी। कार्यशाला में विभिन्न नवोन्मेषी कृषकों, उत्कृष्ट प्रस्तुति करने वाले कृषि विज्ञान केन्द्रों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों की विभिन्न समस्याओं जैसे पेंशन, प्रमोशन आदि का जल्दी निस्तारण करने का आश्वासन दिया।

डा0 यू0एस0 गौतम, निदेशक, भाकृअनुप–अटारी, जोन–3, कानपुर ने कार्यशाला के विगत 3 दिनों की गतिविधियों से अवगत कराया तथा आगामी कार्ययोजना में जलवायु परिवर्तन, नवाचार, कृषि विविधीकरण, एकीकृत खेती पद्धति, किसान उत्पादक संगठन, मूल्यवर्धन आदि तकनीकी बिन्दुओं को समाहित करने पर बल दिया।

पद्मश्री, भारत भूषण त्यागी ने अपने सम्बोधन में प्राकृतिक खेती की नीति तथा भाकृअनुप, कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विभाग के समन्वय से एक जनपद स्तरीय समन्वित कृषि नीति बनाने पर बल दिया।

कार्यशाला में विगत 11 सितम्बर, 2022 को तीन तकनीकी सत्र में प्रस्तुतीकरण उपरान्त कृषि विज्ञान केन्द्र बस्ती, बदायूं–I एवं महोबा को प्रथम एवं कृषि विज्ञान केन्द्र लखनऊ, बरेली, कन्नौज का द्वितीय तथा कृषि विज्ञान केन्द्र मेरठ, मऊ, फतेहपुर, हमीरपुर को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कार्यशाला में इनोवेटिव फार्मर्स मीट का भी आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय कार्यक्षेत्र के 38 प्रगतिशील कृषकों ने प्रतिभाग किया। साथ ही महिला कृषक पूजा गंगवार, शाहजहॉपुर, सपना शर्मा, हापुड़, डा0 विपिन परमार, सहारनपुर, शरद कुमार, बिजनौर, ऋतुराज, बिजनौर, अमित वर्मा, रामपुर, संजीव, गौतमबुद्धनगर आदि अपने–अपने नवोचार के बारे में प्रस्तुतीकरण किया।

डा0 पी0के0 सिंह, निदेशक प्रसार द्वारा समापन अवसर पर मुख्य अतिथि, डा0 देवेश चतुर्वेदी, डा0 डी0आर0 सिंह, कुलपति, डा0 यू0एस0 गौतम, निदेशक अटारी, श्रीमती लक्ष्मी मिश्रा, वित्त नियंत्रक, समस्त निदेशक, अधिष्ठाता, कृषि विज्ञान केन्द्रों के अध्यक्षों/प्रभारी अधिकारी, प्रगतिशील कृषकों आदि को कार्यशाला की सफलता हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।